

राम प्रसाद बस्मिलि

11 जून, 2023 को राम प्रसाद बस्मिलि की 126वीं जयंती मनाई गई। अपने क्रांतिकारी वचारों और काव्य कौशल के लिये पहचाने जाने वाले बस्मिलि ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के वरिद्ध लड़ाई में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बस्मिलि के बारे में प्रमुख बटु:

■ जन्म:

- बस्मिलि का जन्म 11 जून, 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर ज़िले के एक गाँव में मुरलीधर और मूलमती के यहाँ हुआ था।

■ परचिय:

- बस्मिलि आर्य समाज (वर्ष 1875 में दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित) में शामिल हो गए और 'बस्मिलि' यानी 'घायल' या 'बेचैन' जैसे नामों का उपयोग करते हुए एक प्रतभाशाली लेखक और कवि बन गए।
- एक भारतीय राष्ट्रवादी और आर्यसमाजी धर्मप्रचारक भाई परमानंद को मौत की सज़ा के बारे में पढ़कर उनमें पहली बार देशभक्त की भावना उत्पन्न हुई।
- वह तब 18 वर्ष के थे और उन्होंने अपनी कविता 'मेरा जन्म' के माध्यम से अपनी पीड़ा व्यक्त की।
- वह गांधीवादी तरीकों के वपिरीत स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी तरीकों में वशिवास करते थे।

■ राम प्रसाद बस्मिलि का योगदान:

○ मैनपुरी षडयंत्र:

- बस्मिलि का कॉन्ग्रेस पार्टी की उदारवादी वचारधारा से मोहभंग हो गया और उन्होंने 'मातृवेदी' नामक एक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- वे वर्ष 1918 के 'मैनपुरी षडयंत्र' में शामिल थे, जिसमें बस्मिलि और दीक्षिति को सरकार द्वारा प्रतबिंधित पुस्तकें बेचते हुए पाया गया था।
- 28 जनवरी, 1918 को बस्मिलि ने पैम्फलेट के रूप में अपने दो लेखों- देशवासियों के नाम संदेश (अ मैसेज टू कंट्रीमेन) और मैनपुरी की प्रतजिज्ञा (वाउ ऑफ मैनपुरी) को आम लोगों में वतितरि कथि।
- वर्ष 1918 में तीन मौकों पर उन्होंने अपनी पार्टी के लिये धन इकट्ठा करने हेतु सरकारी खजाने को लूटा।

○ हडुस्तान रपिब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना:

- वर्ष 1920 में उन्होंने सचदिर नाथ सान्याल और जादूगोपाल मुखर्जी के साथ हडुस्तान रपिब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का गठन कथि।
- HRA का घोषणापत्र मुख्य रूप से बस्मिलि द्वारा लिखा गया, जिसका उद्देश्य सशस्त्र क्रांतिके माध्यम से संयुक्त राज्य भारत के रूप में एक संघीय गणराज्य की स्थापना करना था।

○ काकोरी कांड:

- वर्ष 1925 में काकोरी ट्रेन डकैती HRA की एक बड़ी कार्रवाई थी, जिसका उद्देश्य अपनी गतिविधियों और प्रचार हेतु धन प्राप्त करना था।
- बस्मिलि और उनके साथी चंद्रशेखर आज़ाद एवं अशफाकउल्ला खान ने लखनऊ के पास काकोरी में ट्रेन लूटने का फैसला कथि।
- वे अपने प्रयास में सफल रहे हालाँकि घटना के एक महीने के भीतर एक दर्जन अन्य HRA सदस्यों के साथ गरिफ्तार कर लिये गए और उन पर काकोरी षडयंत्र केस के तहत मुकदमा चलाया गया।
- यह कानूनी प्रक्रिया 18 महीने चली। बस्मिलि, लाहड़ी, खान और ठाकुर रोशन सहि को मौत की सज़ा दी गई।

○ कवति और लेखन:

- हदि और उर्दू में देशभक्त छंदों सहित बस्मिलि के वपुल लेखन ने भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने हेतु प्रेरित कथि।
- उनकी कवतिओं में सामाजिक मुद्दों और समानता तथा मानवीय गरमि के सदिधांतों के लिये सरोकार परलिक्षित होता है।

○ हट्टि-मुसलमि एकता का समर्थन:

- साथी क्रांतिकारी कवि अशफाकउल्ला खान के साथ बस्मिलि की घनषिठ मतिरता सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक थी।
- फाँसी से पहले अपने आखरी पत्र में उन्होंने देश की सेवा के लिये हडुओं और मुसलमानों को एकजुट होने की आवश्यकता पर बल दथि।

■ मृत्यु:

- 19 दसंबर, 1927 को गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी दे दी गई।

◦ राप्ती नदी के तट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया था और इस स्थल को बाद में **राज घाट** नाम दिया गया ।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/ram-prasad-bismil-1>

